॥ ९ - मातंगी महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

अनुक्रमाणिका

माँ मातंगी

मातंगी यन्त्र
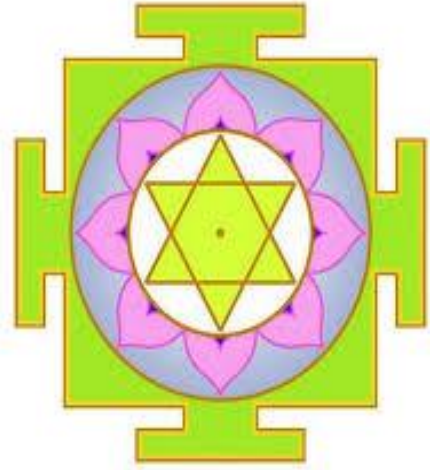
॥ देवी मातङ्गी ॥

देवी मातंगी दसमहाविद्या में नवीं महाविद्या हैं। मतंग शिवका नाम है, इनकी शक्ति मातंगी है। मातङ्गी के ध्यान में बताया गया है कि ये श्यामवर्णा हैं और चन्द्रमा को मस्तक पर धारण किये हुए हैं। भगवती मातङ्गी त्रिनेत्रा, रत्नमय सिंहासनपर आसीन, नीलकमल के समान कान्तिवाली तथा राक्षस-समूह रूप अरण्य को भस्म करने में दावानल के समान हैं। इन्होंने अपनी चार भुजाओं में पाश, अङ्कुश, खेटक और खड्ग धारण किया है। ये असुरों को मोहित करने वाली एवं भक्तों को अभीष्ट फल देनेवाली हैं। गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने, पुरुषार्थ सिद्धि और वाग्विलास में पारंगत होने के लिये मातङ्गी की साधना श्रेयस्कर है।

नारदपाञ्चरात्र के बारहवें अध्याय में शिव को चाण्डाल तथा शिवा को उच्छिष्ट चाण्डाली कहा गया है। इनका ही नाम मातङ्गी है। पुराकाल में मतङ्ग नामक मुनिने नाना वृक्षों से परिपूर्ण कदम्ब-वन में सभी जीवों को बश में करनेके लिये भगवती त्रिपुरा की प्रसन्नता हेतु कठोर तपस्या की थी, उस समय त्रिपुरा के नेत्र से उत्पन्न तेज ने एक श्यामल नारी-विग्रह का रूप धारण कर लिया। इन्हें राज-मातंगिनी कहा गया। यह दक्षिण तथा पश्चिमानाय की देवी हैं। ब्रह्मयामल इन्हें मतङ्ग मुनि की कन्या बताता है।

दशमहाविद्याओं में मातङ्गी की उपासना विशेष रूप से वाक्-सिद्धि के लिये की जाती है।

- **अक्षवक्ष्ये महादेवी मातङ्गी सर्व सिद्धिदाम्।**
  अस्याः सेवनमात्रेण वासिद्धिं लभते ध्रुवम्॥ पुरश्चर्यार्णव

मातङ्गी का श्यामवर्ण परावाक् बिन्दु है। उनका त्रिनयन सूर्य, सोम और अग्नि है। उनकी चार भुजाएँ चार वेद हैं। पाश अविद्या है, अंकुश विद्या है, कर्मराशि दण्ड है। शब्द-स्पर्शादि गुण कृपाण है अर्थात् पञ्चभूतात्मक सृष्टि के प्रतीक हैं।

दुर्गासप्तशती के सातवें अध्याय में भगवती मातङ्गी के ध्यानका वर्णन करते हुए कहा गया है कि वे रत्नमय सिंहासनपर बैठकर पढ़ते हुए तोते का मधुर शब्द सुन रही हैं। उनके शरीर का वर्ण श्याम है। वे अपना एक पैर कमलपर रखी हुई हैं। अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र तथा गले में कल्हार पुष्पों की माला धारण करती हैं। वीणा बजाती हुई भगवती मातङ्गी के अङ्ग में कसी हुई चोली शोभा पा रही है। वे लाल रंग की साड़ी पहने तथा हाथ में शंखमय पात्र लिये हुए हैं। उनके वदन पर मधु का हलका-हलका प्रभाव जान पड़ता है और ललाट में विन्दी शोभा पा रही है। इनका वालकी धारण करना नादका प्रतीक है। तोते का पढ़ना 'ह्रीं' वर्ण का उच्चारण करना है, जो बीजाक्ष रका प्रतीक है। कमल वर्णात्मक सृष्टि का प्रतीक है। शंखपात्र ब्रह्मरन्ध्र तथा मधु अमृत का प्रतीक है। रक्तवस्त्र अग्नि या ज्ञानका प्रतीक है। वाग्देवी के अर्थ में मातङ्गी यदि व्याकरण रूपा हैं तो शुक शिक्षा का प्रतीक है। चार भुजाएँ वेदचतुष्टय हैं। इस प्रकार तान्त्रिकों की भगवती मातङ्गी महाविद्या वैदिकों की सरस्वती ही हैं। तन्त्रग्रन्थों में इनकी उपासना का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

यह वाणी और संगीत की अधिष्ठात्री देवी कही जाती हैं। यह स्तम्भन की देवी हैं तथा इनमें संपूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति का समावेश हैं। पलास और मल्लिका पुष्पों से युक्त बेलपत्रों की पूजा करने से व्यक्ति के अंदर आकर्षण और स्तम्भन शक्ति का विकास होता है। वशीकरण में भी यह महाविद्या कारगर होती है।

- मुख्य नाम : **मातंगी।**
- अन्य नाम : **सुमुखी, लघुश्यामा या श्यामला, उच्छिष्ट-चांडालिनी, महापिशाचिनी, उच्छिष्ट-मातंगी, राज-मातंगी, कर्ण-मातंगी, चंड-मातंगी, वश्य-मातंगी, मातंगेश्वरी, ज्येष्ठ-मातंगी, सारिकांबा, रत्नांबा मातंगी, वर्ताली मातंगी।**
- आठ शक्तियां **रति, प्रीति, मनोभाव, क्रिया, शुधा, अनंग कुसुम, अनंग मदन, मदन लसा।**
- भैरव : **मतंग।**
- भगवान के २४ अवतारों से सम्बद्ध : **बुद्ध अवतार।**
- तिथि : **वैशाख शुक्ल तृतीया। (अक्षय तृतीया)**
- कुल : **श्रीकुल।**
- दिशा : **वायव्य कोण। यह देवी दक्षिण तथा पश्चिम की देवता हैं।**
- स्वभाव : **सौम्य स्वभाव।**
- कार्य : **सम्मोहन एवं वशीकरण, तंत्र विद्या पारंगत, संगीत तथा ललित कला निपुण।**
- शारीरिक वर्ण : **काला या गहरा नीला।**
- विशेषता : **मोहनी विद्या।**

॥ मातङ्गी माता का मंत्रः ॥

- स्फटिक की माला से बारह माला मंत्र का जाप कर सकते हैं।
- मातंगी महाविद्या का मंत्र, मातंगी साधक ही प्रदान कर सकता है, अन्य किसी महाविद्या का साधक इनके मंत्र को प्रदान करने का अधिकारी नहीं है। स्वयं मंत्र लेकर जपने से महाविद्याओं के मंत्र सिद्ध नहीं होते, अतः किसी भी मन्त्र प्रयोग से पूर्व किसी सिद्ध मातङ्गी साधक से दीक्षा अवश्य लें।
- नोट : मातंगी महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्युकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।

- बीज मंत्र **ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।**
  - विनियोग अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि:विंराट् छंद:, मातंगी देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्ति:, क्लीं कीलकं, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोग:।
  - अंगन्यास हां, ह्रीं, हूं, हैं, हौं, ह: से हृदयादि न्यास करें।
- महा मंत्र **ॐ ह्रीं ऐं भगवती मतंगेश्वरी श्रीं स्वाहा: ।**
- मंत्र **ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं महा मातंगी प्रचिती दायिनी,लक्ष्मी दायिनी नमो नम:।**
  आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए मंत्र
- मंत्र **क्रीं ह्रीं मातंगी ह्रीं क्रीं स्वाहा: ।** सभी सुखो की प्राप्ति हेतु
- अष्टाक्षर मंत्र **कामिनी रंजनी स्वाहा।**
  - विनियोग अस्य मंत्रस्य सम्मोहन ऋषि:, निवृत् छंद:, सर्व सम्मोहिनी देवता सम्मोहनार्थे जपे विनियोग:।
  - 20 हजार जप कर मधुयुक्त मधूक पूष्पों से हवन करने पर अभीष्ट की सिद्धि होती है।
- विंशाक्षर मंत्र **ऐं नम: उच्छिष्ट चांडालि मातंगी सर्ववशंकरि स्वाहा।**
  इसके प्रयोग से डाकिनी, शाकिनी एवं भूत-प्रेत बाधा नहीं पहुंचा सकते हैं।
- एकोन विंशाक्षर उच्छिष्ट मातंगी तथा द्वात्रिंशदक्षरों मातंगी मंत्र
  - मंत्र **नम: उच्छिष्ट चांडालि मातंगी सर्ववशंकरि स्वाहा।**
  - मंत्र **ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट चांडालि श्रीमातंगेश्वरि सर्वजन वशंकरि स्वाहा।**
  - इस मंत्र का पुरश्चरण 10 हजार जप है। उसके बाद दशांस हवन करे।
  - शहद व महुआ के पुष्पों से हवन करने पर वशीकरण का प्रयोग सिद्ध होता है। मल्लिका फूल के होम से योग सिद्धि, बेल फूल के हवन से राज्य प्राप्ति, पलास के पत्ते व फूल के हवन में जन वशीकरण, गिलोय के हवन से रोगनाश, थोड़े से नीम के टुकड़ों व चावल के हवन से धन प्राप्ति, नीम के तेल से भीगे नमक से होम करने पर शत्रुनाश, केले के फल के हवन से समस्त कामनाओं की सिद्धि होती है। खैर की

लकड़ी से हवन कर मधु से भीगे नमक के पुतले के दाहिने पैर की ओर हवन की अग्नि में तपाने से शत्रु वश में होता है।

- सुमुखी मातंगी प्रयोग इसमें दो मंत्र हैं जिसमें सिर्फ ई की मात्रा का अंतर है पर ऋषि दोनों के अलग-अलग हैं। इसमें फल समान है।
    - मंत्र **उच्छिष्ट चांडालिनी सुमुखी देवी महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः।**
        - इसके ऋषि अज, छंद गायत्री और देवता सुमुखी मातंगी हैं।
        - देवी के विधिपूर्वक पूजन के बाद जूठे मुंह आठ हजार जप करने से ही इसका पुरश्चरण होता है। साधक को धन की प्राप्ति होती है।
    - मंत्र **उच्छिष्ट चांडालिनि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः।**
        - इसके ऋषि भैरव, छंद गायत्री और देवता सुमुखी मातंगी हैं।
        - जानकरों के अनुसार देवी के विधिपूर्वक पूजन के बाद जूठे मुंह दस हजार जप करने से ही इसका पुरश्चरण होता है और साधक को धन की प्राप्ति होती है।
        - हवन विधि- दही मिश्रित पीली सरसो व चावल से हवन करने पर राजा-मंत्री सभी वश में हो जाते हैं। बिल्ली के मांस से हवन करने पर शस्त्र का वसीकरण होता है। बकरे के मांस के हवन से धन-समृद्धि मिलती है। खीर के हवन से विद्या प्राप्ति तथा मधु व घी युक्त पान के पत्तों के हवन से महासमृद्धि की प्राप्ति होती है। कौवे व उल्लू के पंख के हवन से शत्रुओं का विद्वेषण होता है।
- कर्ण मातंगी साधना मंत्र
    - मंत्र **ऐं नमः श्री मातंगि अमोघे सत्यवादिनि ममकर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय एह्येहि श्री मातंग्यै नमः।**
        - पुरश्चरण के लिए आठ हजार की संख्या में जप करें।
        - लाल चन्दन की या मूँगे या रुद्राक्ष की माला मंत्र जाप के लिए श्रेष्ठ है।
        - इसमें हवन भी आवश्यक नहीं है। खीर को प्रसाद रूप में माता को चढ़ा कर उससे हवन करना अतिरिक्त ताकत देता है। इसके साधक को माता कर्ण मातंगी भविष्य में घटने वाली शुभ-अशुभ घटनाओं की जानकारी स्वप्न में देती हैं। इच्छुक साधक को माता से प्रश्न का जवाब भी मिल जाता है। भक्ति-पूर्वक एवं निष्काम साधना करने पर माता साधक का पथ-प्रदर्शन करती हैं।
- मातङ्गी गायत्री **ॐ शुकप्रियाये विद्महे श्रीकामेश्वर्ये धीमहि तन्नः श्यामा प्रचोदयात।**
- मातङ्गी यन्त्र जिनके घर में सदा क्लेश हो, पति पत्नी में मतभेद बढ़ गए हों, एक दूसरे की तरफ प्रेम न हो, तरक्की न होती हो या संतान गलत दिशा में भटक गयी हो अथवा रोज कोई न कोई अपशकुन होता हो उन्हें किसी सिध्द मातङ्गी साधक से मातङ्गी यन्त्र विधि पूर्वक प्रतिष्ठित करवा कर अपने घर मे स्थापित करना चाहिए व् इसका नित्य पूजन करना चाहिए।

॥ श्री मातङ्गी ध्यानम् ॥

- तालीदलेनार्पितकर्णभूषां
  माध्वीमदोद्घूर्णितनेत्रपद्माम् ।
  घनस्तनीं शम्भुवधूं नमामि ।
  तडिल्लताकान्तिमनर्घ्यभूषाम् ॥ ॥ १ ॥
- घनश्यामलाङ्गीं स्थितां रत्नपीठे
  शुकस्योदितं शृण्वतीं रक्तवस्त्राम् ।
  सुरापानमत्तां सरोजस्थितां श्रीं
  भजे वल्लकीं वादयन्तीं मतङ्गीम् ॥ ॥ २ ॥
- माणिक्याभरणान्वितां स्मितमुखीं नीलोत्पलाभां वरां
  रम्यालक्तक लिप्तपादकमलां नेत्रत्रयोल्लासिनीम् ।
  वीणावादनतत्परां सुरनुतां कीरच्छदश्यामलां
  मातङ्गीं शशिशेखरामनुभजे ताम्बूलपूर्णाननाम् ॥ ॥ ३ ॥
- श्यामाङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां वेदैः करैर्बिभ्रतीं
  पाशं खेटमथाङ्कुशं दृढमसिं नाशाय भक्तद्विषाम् ।
  रत्नालङ्करणप्रभोज्वलतनुं भास्वत्किरीटां शुभां
  मातङ्गीं मनसा स्मरामि सदयां सर्वार्थसिद्धिप्रदाम् ॥ ॥ ४ ॥
- देवीं षोडशवार्षिकीं शवगतां माध्वीरसाघूर्णितां
  श्यामाङ्गीमरुणाम्बरां पृथुकुचां गुञ्जावलीशोभिताम् ।
  हस्ताभ्यां दधतीं कपालममलं तीक्ष्णां तथा कर्त्रिकां
  ध्यायेन्मानसपङ्कजे भगवतीमुच्छिष्टचाण्डालिनीम् ॥ ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमातङ्गीध्यानम् ॥

- ध्यानम्

**ॐ श्यामांगी शशिशेखरां त्रिनयनां वेदैः करैर्विभ्रतीं,
पाशं खेटमथांकुशं दृढमसिं नाशाय भक्तद्विषाम्।
रत्नालंकरणप्रभोज्जवलतनुं भास्वत्किरीटां शुभां,
मातंगी मनसा स्मरामि सदयां सर्वाथसिद्धिप्रदाम्॥**

- **ॐ श्यामांगीं शशिशेखरां त्रिनयनां रत्नसिंहासनस्थिताम्।
वेदैः र्बाहुदण्डैरसि – खेटक - पाशांकुशधराम्॥**
मातंगी देवी श्याम वर्ण, अर्द्ध चन्द्रधारिणी और त्रिनेत्रा हैं। यह चार हाथ में खंग, खेटक, पाश और अंकुश धारण करके रत्न निर्मित सिंहासन पर विराजमान हैं।

- **अथ मातंगिनी वक्ष्ये क्रूरभूतभयंकरीम्।
पुरा कदम्बविपिने नानावृक्षसमाकुले॥** ॥ १ ॥
- **वश्यार्थ सर्वभूतानां मतंगो नामतो मुनिः।
शतवर्षसहस्राणि तपोऽतप्यत सन्ततम्॥** ॥ २ ॥
- **तत्र तेजः समुत्पन्नं सुन्दरीनेत्रतः शुभे।
तजोराशिरभत्तत्र स्वयं श्रीकालिकाम्बिका।
श्यामलं रूपमास्थाय राजमातंगिनी भवेत्॥** ॥ ३ ॥
इसका तात्पर्य है कि कालिका, त्रिपुरा तथा मातंगी में कोई भेद नहीं। इस रूप की उपासना का लक्ष्य वाक् सिद्धि है। अतः वाणीदात्री के रूप में ही मातंगी की उपासना अभीष्ट है।

॥ मातङ्गी स्तोत्रम् - १ ॥

- ईश्वर उवाच आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते, ब्रह्मादयो विस्तृतकीर्तिमापः ।
अन्ये परं वा विभवं मुनीन्द्राः, परां श्रियं भक्तिपरेण चान्ये ॥ ॥ १ ॥

- नमामि देवीं नवचन्द्रमौले, र्मातङ्गिनीं चन्द्रकलावतंसाम् ।
आम्नायप्राप्तिप्रतिपादितार्थं, प्रबोधयन्तीं प्रियमादरेण ॥ ॥ २ ॥

- विनम्रदेवासुरमौलिरन्तै, र्विराजितन्ते चरणारविन्दम् ।
अकृत्रिमाणावचसाविशुक्लम्, पदाम्पदं शिक्षितनूपुराभ्याम् ॥ ॥ ३ ॥

- कृतार्थयन्तीं पदवीं पदाभ्याम्, अस्फालयन्तीङ्कलवल्लकीन्ताम् ।
मातङ्गिनीं सद्धृदयान्धिनोमि, लीलांशुकां शुद्धनितम्बबिम्बाम् ॥ ४ ॥

- तालीदलेनार्पितकर्णभूषां, माध्वीमदोद्घूर्णितनेत्रपद्माम् ।
घनस्तनीं शम्भुवधून्नमामि, तडिल्लताकान्तिमनर्घ्यभूषाम् ॥ ॥ ५ ॥

- चिरेण लक्ष्यान्नवलोमराज्यां, स्मरामि भक्त्या जगतामधीशे ।
बलित्रयाढ्यन्तव मध्यमम्ब, नीलोत्पलांशुश्रियमावहन्तीम् ॥ ॥ ६ ॥

- कान्त्या कटाक्षैः कमलाकराणाङ्, कदम्बमालाञ्चितकेशपाशाम् ।
मातङ्गकन्यां हृदि भावयामि, ध्यायेयमारक्तकपोलबिम्बाम् ॥ ॥ ७ ॥

- बिम्बाधर न्यस्तललामवश्य, मालोललीलालकमायताक्षम् ।
मन्दस्मितन्ते वदनं महेशि, स्तुत्यानया शङ्करधर्मपत्नीम् ॥ ॥ ८ ॥

- मातङ्गिनीवागधिदेवतान्तां, स्तुवन्ति ये भक्तियुता मनुष्याः ।
परां श्रियन्नित्यमुपाश्रयन्ति, परत्र कैलासतले वसन्ति ॥ ॥ ९ ॥

- उद्यद्भानुमरीचिवीचिविलसद्वासो वसानां परां
गौरीं सञ्गतिपानकर्परकरामानन्दकन्दोद्भवाम् ।
गुञ्जाहारचलद्विहारहृदयामापीनतुङ्गस्तनीं
मत्तस्मेरमुखीं नमामि सुमुखीं शावासनांसेदुषीम् ॥ ॥१०॥

॥ इति रुद्रयामले मातङ्गीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ मातङ्गी स्तोत्रम् - २ ॥

- आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते ब्रह्मादयो विश्रुतकीर्त्तिमापु: ।
  अन्ये परं वा विभवंमुनीन्द्रा: परां श्रियं भक्तिभरेण चान्ये ॥ ॥ १ ॥

- नमामि देवीं नवचन्द्रमौलिं मातंगिनीं चन्द्रकलावतंसाम् ।
  आम्नायकृत्यप्रतिपादितार्थं प्रबोधयन्तीं हृदिसादरेण ॥ ॥ २ ॥

- विनम्रदेवासुरमौलिरत्नैर्विराजितं ते चरणारविन्दम् ।
  अकृत्रिमाणां वचसां विगुल्फं पादात्पदं सिंजितनूपुराभ्याम् ॥ ॥ ३ ॥

- कृतार्थयन्तीं पदवीं पदाभ्यामास्फालयन्तीं कुचवल्लकीं ताम् ।
  मातंगिनीं मद्धृदयेधिनोमि लीलंकृतां शुद्ध नितम्बबिम्बाम् ॥ ॥ ४ ॥

- तालीदलेनार्पितकर्णभूषां माध्वीमदाघूर्णितनेत्रपद्माम् ।
  घनस्तनीं शम्भुवधूं नमामि तडिल्लताकान्तवलक्षभूषाम् ॥ ॥ ५ ॥

- चिरेण लक्षं प्रददातु राज्यं स्मरामि भक्त्या जगतामधीशे ।
  वलित्रयांग तव मध्यमम्ब नीलोत्पलं सुश्रियमावहन्तीम् ॥ ॥ ६ ॥

- कान्त्या कटाक्षैर्जगतां त्रयाणां विमोहयन्तीं सकलान् सुरेशि ।
  कदम्बमालाचिंतकेशपाशं मातंगकन्यां हृदि भावयामि ॥ ॥ ७ ॥

- ध्यायेयमारक्तकपोलबिम्बं बिम्बाधरन्यस्तललाम वश्यम् ।
  अलोललीलाकमलायताक्षं मन्दस्मितं ते वदनं महेशि ॥ ॥ ८ ॥

- स्तुत्याऽनया शंकरधर्मपत्नी मातंगिनीं वागधिदेवतां ताम ।
  स्तुवन्ति यं भक्तियुता मनुष्या: परां श्रियं नित्यमुपाश्रयन्ति ॥ ॥ ९ ॥

॥ इति श्री मातंगी स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ मातङ्गी हृदय स्तोत्रम् ॥

- **विनियोग** — ॐ अस्य श्री मातंगी हृदय स्तोत्र मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि, विराट् छन्दो, मातंगी देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्लीं कीलकं सर्ववांछितार्थ सिद्धये पाठे विनियोगः।

- **ऋष्यादिन्यास**

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि ।	सिर को स्पर्श करें
विराट् छन्दसे नमः मुखे ।	मुख को स्पर्श करें
मातंगी देवतायै नमः हृदि ।	हृदय को स्पर्श करें
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ।	गुह्य स्थान को स्पर्श करें
हूं शक्तये नमः पादयोः ।	पैरों को स्पर्श करें
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।	नाभि को स्पर्श करें
विनियोगाय नमः सर्वांगे ।	सभी अंगों को स्पर्श करें

- **कर-न्यास**

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं अँगुष्ठाभ्याम् नमः।	तर्जनी उंगलियों से दोनों अँगूठे को स्पर्श करें
नमो भगवति तर्जनीभ्याम् नमः।	अँगूठों से दोनों तर्जनी उंगलियों को स्पर्श करें)
उच्छिष्ट चाण्डालि मध्यमाभ्याम् नमः।	अँगूठों से दोनों मध्यमा उंगलियों को स्पर्श करें
श्रीमातंगेश्वरि अनामिकाभ्याम् नमः।	अँगूठों से दोनों अनामिका उंगलियों को स्पर्श करें
सर्वजनवशंकरि कनिष्ठिकाभ्याम् नमः।	अँगूठों से दोनों कनिष्ठिका उंगलियों को स्पर्श करें
स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्याम् नमः।	परस्पर दोनों हाथों को स्पर्श करें

- **हृदयादि-न्यास**

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हृदयाय नमः ।	हृदय को स्पर्श करें
नमो भगवति शिरसे स्वाहा ।	सिर को स्पर्श करें
उच्छिष्ट चाण्डालि शिखायै वषट् ।	शिखा को स्पर्श करें
श्रीमातंगेश्वरि कवचाय हुम् ।	भुजाओं को स्पर्श करें
सर्वजनवशंकरि नेत्रत्रयाय वौषट् ।	नेत्रों को स्पर्श करें
स्वाहा अस्त्राय फट् ।	सिर से घूमाकर तीन बार ताली बजाएं

- **ध्यान** — **ॐ घनश्यामलांगीं स्थितां रत्नपीठे शुकस्योदितं श्रृण्वतीं रक्त वस्त्राम् ।**
सुरापानमत्तां सरोजस्थितां श्रीं भजे वल्लकीं वादयन्तीं मतंगीम् ॥

- **हृदय स्तोत्रम्** — **एकदा कौतुकाविष्टा भैरवं भूतसेवितम्।**
भैरवी परिपप्रच्छ सर्वभूतहिते रता ॥ ॥ १ ॥

- **श्रीभैरव्युवाच** — **भगवन्सर्वधर्मज्ञ भूतवात्सल्यभावन।**
अहं तु वेत्तुमिच्छामि सर्वभूतोपकारम् ॥ ॥ २ ॥

- **केन मन्त्रेण जप्तेन स्तोत्रेण पठितेन च।**
सर्वथा श्रेयसाम्प्राप्तिर्भूतानां भूतिमिच्छताम् ॥ ॥ ३ ॥

- **श्रीभैरव उवाच** — **श्रृणु देवि तव स्नेहात्प्रायो गोप्यमपि प्रिये।**
कथयिष्यामि तत्सर्वं सुखसम्पत्करं शुभम् ॥ ॥ ४ ॥

- पठतां श्रृण्वतां नित्यं सर्वसम्पतित्तदायकम्।
  विद्यैश्वर्यसुखावाप्ति मंगलप्रदमुत्तमम् ॥ ॥ ५ ॥
- मातंग्या हृदयं स्तोत्र दु:खदारिद्रयभंजनम् ।
  मंगलं मंगलानां च अस्ति सर्वसुखप्रदम् ॥ ॥ ६ ॥

- ध्यानम्

ॐ श्यामां शुभ्रांशुभालां त्रिकमलनयनां रत्नसिंहासनस्थां
भक्ताभीष्टप्रदात्रीं सुरनिकरकरा सेव्यकञ्जांघ्रियुग्माम् ।
नीलाम्भोजां सुकान्तिं निशिचर निकरारण्य दावाग्निरूपां
पाशं खड्गं चतुर्भिर्वर कमलकरैः खेटकं च अंकुश्च ॥
मातंगीमावहन्तीमभिमत फलदां मोदिनीं चिन्तयामि ।

- मूल स्तोत्रम्
- ॐ नमस्ते मातंग्यै मृदुमुदिततन्वै तनुमतां परश्रेयोदायै कमलचरण ध्यान मनसाम् ।
  सदा सं सेव्यायै सदसि पिबुधैर्दिव्यधिषणैर्दयार्द्रायै देव्यै दुरितदलनोद्दण्डमनसे ॥ ॥१॥
- परं मातस्ते यो जपति मनुमव्यग्रहृदयः कवित्वं कल्पानां कलयति सुकल्पः प्रतिपदम् ।
  अपि प्रायो रम्यामृतमयपदा तस्य ललिता नटीं मन्या वाणी नटति रसनायां चपलिता ॥२॥
- तव ध्यायन्तो ये वपुरनुजपन्ति प्रवलितं सदा मन्त्रं मातर्न हि भवति तेषां परिभवः।
  कदम्बानां माला: शिरसि तव युञ्जन्ति सदये भवन्ति प्रायस्ते युवतिजनयूथस्व वशगा:॥३॥
- सरोजैस्साहस्रैस्सरसिजपद द्वन्द्वमपि ये सहस्त्र नामोक्त्वा तदपि तव डेन्तं मनुमितम्।
  पृथङ्नाम्ना तेनायुत कलितमर्चन्ति खलु ते सदा देवव्रात प्रणमित पदांभोजयुगला:॥ ॥४॥
- तव प्रीत्यै मातर्ददति बलिमाधाय बलिना समत्स्यं माँसं वा सुरुचिरसितं राजरुचितम्।
  सुपुण्या ये स्वान्तस्तव चरणमोदैक रसिका अहो भाग्यं तेषां त्रिभुवनमलं वश्यमखिलम् ॥५॥
- लसल्लोल श्रोत्राभरण किरणक्रान्तिकलितं मितस्मितत्यापन्न प्रतिभितममन्नं विकरितम्।
  मुखाम्भोजं मातस्तव परिलुठद्भ्रूमधुकरं रमा ये ध्यायन्ति त्यजति न हि तेषां सुभवनम् ॥६॥
- परः श्रीमातंग्या जयति हृदयाख्यस्सुमनसामयं सेव्यस्सद्योभिमत फलदश्चाति ललितः।
  नरा ये श्रृण्वन्ति स्तवमपि पठन्तिममनिशं न तेषां दु:प्राप्यं जगति यदलभ्यं दिविषदाम् ॥७॥

- फलश्रुति

धनार्थी धनमाप्नोति दारार्थी सुन्दरीं प्रियाम् ।
सुतार्थी लभते पुत्रं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात् ॥ ॥ १ ॥

- विद्यार्थी लभते विद्यां विविधां विभवप्रदाम् ।
  जयार्थी पठनादस्य जयं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ ॥ २ ॥
- नष्टराज्यो लभेद्राज्यं सर्वसम्पत्समाश्रितम् ।
  कुबेरसम सम्पत्तिः स भवेद्धृदयं पठन् ॥ ॥ ३ ॥
- किमन्त्र बहुनोक्तेन यद्यदिच्छति मानवः ।
  मातंगीहृदयस्तोत्र पाठात्तत्सर्वमाप्नुयात् ॥ ॥ ४ ॥

॥ मातङ्गी कवच - १ ॥

- श्रीदेव्युवाच

साधु-साधु महादेव ! कथयस्व सुरेश्वर !
मातंगी-कवचं दिव्यं, सर्व-सिद्धि-करं नृणाम् ॥

- श्री ईश्वर उवाच

श्रृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि, मातंगी-कवचं शुभं ।
गोपनीयं महा-देवि ! मौनी जापं समाचरेत् ॥

- विनियोग

ॐ अस्य श्रीमातंगी-कवचस्य श्री दक्षिणा-मूर्तिः ऋषिः । विराट् छन्दः ।
श्रीमातंगी देवता । चतुर्वर्ग-सिद्धये जपे विनियोगः ।

- ऋष्यादि-न्यासः

श्री दक्षिणा-मूर्तिः ऋषये नमः शिरसि ।
विराट् छन्दसे नमः मुखे ।
श्रीमातंगी देवतायै नमः हृदि ।
चतुर्वर्ग-सिद्धये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

- कवच

ॐ शिरो मातंगिनी पातु, भुवनेशी तु चक्षुषी ।
तोडला कर्ण-युगलं, त्रिपुरा वदनं मम ॥ ॥ १ ॥

- पातु कण्ठे महा-माया, हृदि माहेश्वरी तथा ।
  त्रि-पुष्पा पार्श्वयोः पातु, गुदे कामेश्वरी मम ॥ ॥ २ ॥

- ऊरु-द्वये तथा चण्डी, जंघयोश्च हर-प्रिया ।
  महा-माया माद-युग्मे, सर्वांगेषु कुलेश्वरी ॥ ॥ ३ ॥

- अंग प्रत्यंगकं चैव, सदा रक्षतु वैष्णवी ।
  ब्रह्म-रन्ध्रे सदा रक्षेन्, मातंगी नाम-संस्थिता ॥ ॥ ४ ॥

- रक्षेन्नित्यं ललाटे सा, महा-पिशाचिनीति च ।
  नेत्रयोः सुमुखी रक्षेत्, देवी रक्षतु नासिकाम् ॥ ॥ ५ ॥

- महा-पिशाचिनी पायान्मुखे रक्षतु सर्वदा ।
  लज्जा रक्षतु मां दन्तान्, चोष्ठौ सम्मार्जनी-करा ॥ ॥ ६ ॥

- चिबुके कण्ठ-देशे च, ठ-कार-त्रितयं पुनः ।
  स-विसर्ग महा-देवि ! हृदयं पातु सर्वदा ॥ ॥ ७ ॥

- नाभि रक्षतु मां लोला, कालिकाऽवत् लोचने ।
  उदरे पातु चामुण्डा, लिंगे कात्यायनी तथा ॥ ॥ ८ ॥

- उग्र-तारा गुदे पातु, पादौ रक्षतु चाम्बिका ।
  भुजौ रक्षतु शर्वाणी, हृदयं चण्ड-भूषणा ॥ ॥ ९ ॥
- जिह्वायां मातृका रक्षेत्, पूर्वे रक्षतु पुष्टिका ।
  विजया दक्षिणे पातु, मेधा रक्षतु वारुणे ॥ ॥१०॥
- नैर्ऋत्यां सु-दया रक्षेत्, वायव्यां पातु लक्ष्मणा ।
  ऐशान्यां रक्षेन्मां देवी, मातंगी शुभकारिणी ॥ ॥११॥
- रक्षेत् सुरेशी चाग्नेये, बगला पातु चोत्तरे ।
  ऊर्ध्वं पातु महा-देवि ! देवानां हित-कारिणी ॥ ॥१२॥
- पाताले पातु मां नित्यं, वशिनी विश्व-रुपिणी ।
  प्रणवं च ततो माया, काम-वीजं च कूर्चकं ॥ ॥१३॥
- मातंगिनी ङे-युताऽस्त्रं, वह्नि-जायाऽवधिर्पुनः ।
  सार्द्धेकादश-वर्णा सा, सर्वत्र पातु मां सदा ॥ ॥१४॥

- फलश्रुति

  इति ते कथितं देवि! गुह्यादुह्यतरं परम्।
- त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं देवदुर्लभम् ॥ ॥१५॥
- यः इदं प्रपठेन्नित्यं जायते सम्पदालयम्।
  परमैश्वर्यमतुलं प्राप्नुयान् नात्र संशयः ॥ ॥१६॥
- गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद् यदि।
  ऐश्वर्यं सु-कवित्वं च वाक्सिद्धिं लभते ध्रुवम् ॥ ॥१७॥
- नित्यं तस्यं तु मातंगी महिला मंगलं चरेत्।
  ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवाः सुरसत्तमाः ॥ ॥१८॥
- ब्रह्मराक्षसवेतालाः ग्रहाद्यां भूतजातयः।
  तं दृष्टवा साधकं देवि! लज्जायुक्ता भवन्ति ते ॥ ॥१९॥
- कवचं धारयेद्यस्तु सर्वासिद्धिं लभेदध्रुवम्।
  राजानोऽपि च दासत्वं षट्कर्माणि च साधयेत् ॥ ॥२०॥
- सिद्धो भवति सर्वत्र किमन्यैर्बहुभाषितैः।
  इदं कवचमज्ञात्वा मातंगीं यो भजेन्नरः ॥ ॥२१॥
- अल्पायुर्निर्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः।
  गुरौ भक्तिः सदा कार्या कवचे च दृढा मतिः ॥ ॥२२॥
- तस्मै मातंगिनी देवी सर्वसिद्धिं प्रयच्छति ॥ ॥२३॥

॥ मातङ्गी कवच - २ ॥

- शिरोमातंगिनी पातु भुवनेशी तु चक्षषी ।
  तोतला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम् ॥ ॥ १ ॥
- पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा ।
  त्रिपुरा पार्श्वयोः पातु गुह्ये कामेश्वरी मम् ॥ ॥ २ ॥
- ऊरुद्वये तथा चण्डी जंघायान्च रतिप्रिया ।
  महामाया पदे पायात्सर्वांगेषु कुलेश्वरी ॥ ॥ ३ ॥
- य इदं धारयेन्नित्यं जायते सर्वदानवित् ।
  परमैश्वर्य्यमतुलं प्राप्नोति नात्र संशयः ॥ ॥ ४ ॥

॥ श्री मातङ्गी अष्टोत्तर शत नामावली ॥

1. श्रीमहामत्तमातङ्गिन्यै नमः।
2. श्रीसिद्धिरूपायै नमः।
3. श्रीयोगिन्यै नमः।
4. श्रीभद्रकाल्यै नमः।
5. श्रीरमायै नमः।
6. श्रीभवान्यै नमः।
7. श्रीभयप्रीतिदायै नमः।
8. श्रीभूतियुक्तायै नमः।
9. श्रीभवाराधितायै नमः।
10. श्रीभूतिसम्पत्तिकर्यै नमः।
11. श्रीजनाधीशमात्रे नमः।
12. श्रीधनागारदृष्ट्यै नमः।
13. श्रीधनेशार्चितायै नमः।
14. श्रीधीवरायै नमः।
15. श्रीधीवराङ्ग्यै नमः।
16. श्रीप्रकृष्टायै नमः।
17. श्रीप्रभारूपिण्यै नमः।
18. श्रीकामरूपायै नमः।
19. श्रीप्रहृष्टायै नमः।
20. श्रीमहाकीर्तिदायै नमः।
21. श्रीकर्णनाल्यै नमः।
22. श्रीकाल्यै नमः।
23. श्रीभगाघोररूपायै नमः।
24. श्रीभगाङ्ग्यै नमः।
25. श्रीभगावाह्यै नमः।
26. श्रीभगप्रीतिदायै नमः।
27. श्रीभिमरूपायै नमः।
28. श्रीभवानीमहाकौशिक्यै नमः।
29. श्रीकोशपूर्णायै नमः।
30. श्रीकिशोर्यै नमः।
31. श्रीकिशोरप्रियानन्दईहायै नमः।
32. श्रीमहाकारणायै नमः।
33. श्रीकारणायै नमः।
34. श्रीकर्मशीलायै नमः।
35. श्रीकपाल्यै नमः।
36. श्रीप्रसिद्धायै नमः।
37. श्रीमहासिद्धखण्डायै नमः।
38. श्रीमकारप्रियायै नमः।
39. श्रीमानरूपायै नमः।
40. श्रीमहेश्यै नमः।
41. श्रीमहोल्लासिन्यै नमः।
42. श्रीलास्यलीलालयाङ्ग्यै नमः।
43. श्रीक्षमायै नमः।
44. श्रीक्षेमशीलायै नमः।
45. श्रीक्षपाकारिण्यै नमः।
46. श्रीअक्षयप्रीतिदाभूतियुक्ताभवान्यै नमः।
47. श्रीभवाराधिताभूतिसत्यात्मिकायै नमः।
48. श्रीप्रभोद्भासितायै नमः।
49. श्रीभानुभास्वत्करायै नमः।
50. श्रीचलत्कुण्डलायै नमः।
51. श्रीकामिनीकान्तयुक्तायै नमः।
52. श्रीकपालाऽचलायै नमः।
53. श्रीकालकोद्धारिण्यै नमः।
54. श्रीकदम्बप्रियायै नमः।
55. श्रीकोटर्यै नमः।
56. श्रीकोटदेहायै नमः।
57. श्रीक्रमायै नमः।
58. श्रीकीर्तिदायै नमः।
59. श्रीकर्णरूपायै नमः।
60. श्रीकाक्ष्म्यै नमः।
61. श्रीक्षमाङ्ग्यै नमः।
62. श्रीक्षयप्रेमरूपायै नमः।
63. श्रीक्षपायै नमः।
64. श्रीक्षयाक्षायै नमः।
65. श्रीक्षयाह्वायै नमः।
66. श्रीक्षयप्रान्तरायै नमः।
67. श्रीक्षवत्कामिन्यै नमः।
68. श्रीक्षारिण्यै नमः।
69. श्रीक्षीरपूषायै नमः।
70. श्रीशिवाङ्ग्यै नमः।
71. श्रीशाकम्भर्यै नमः।
72. श्रीशाकदेहायै नमः।
73. श्रीमहाशाकयज्ञायै नमः।
74. श्रीफलप्राशकायै नमः।
75. श्रीशकाह्वाशकाख्याशकायै नमः।
76. श्रीशकाक्षान्तरोषायै नमः।
77. श्रीसुरोषायै नमः।
78. श्रीसुरेखायै नमः।
79. श्रीमहाशेषयज्ञोपवीतप्रियायै नमः।
80. श्रीजयन्तीजयाजाग्रतीयोग्यरूपायै नमः।
81. श्रीजयाङ्गायै नमः।
82. श्रीजपध्यानसन्तुष्टसंज्ञायै नमः।
83. श्रीजयप्राणरूपायै नमः।
84. श्रीजयस्वर्णदेहायै नमः।
85. श्रीजयज्वालिन्यै नमः।
86. श्रीयामिन्यै नमः।
87. श्रीयाम्यरूपायै नमः।
88. श्रीजगन्मातृरूपायै नमः।
89. श्रीजगद्रक्षणायै नमः।
90. श्रीस्वधावौषडन्तायै नमः।
91. श्रीविलम्बाविलम्बायै नमः।
92. श्रीषडङ्गायै नमः।
93. श्रीमहालम्बरूपाऽसिहस्ताऽऽप्दाहारिण्यै नमः।
94. श्रीमहामङ्गलायै नमः।
95. श्रीमङ्गलप्रेमकीर्त्यै नमः।
96. श्रीनिशुम्भक्षिदायै नमः।
97. श्रीशुम्भदर्पत्वहायै नमः।
98. आनन्दबीजादिस्वरूपायै नमः।
99. श्रीमुक्तिस्वरूपायै नमः।
100. श्रीचण्डमुण्डापदायै नमः।
101. श्रीमुख्यचण्डायै नमः।
102. श्रीप्रचण्डाऽप्रचण्डायै नमः।
103. श्रीमहाचण्डवेगायै नमः।
104. श्रीचलच्चामरायै नमः।
105. श्रीचामराचन्द्रकीर्त्यै नमः।
106. श्रीसुचामिकरायै नमः।
107. श्रीचित्रभूषोज्ज्वलाङ्ग्यै नमः।
108. श्रीसुसङ्गीतगीतायै नमः